सादगी, सत्य और अटूट निश्चय की साकारमूर्त

दादी जानकी जी केवल एक प्रशासिका नहीं बल्कि ज्ञान, सादगी और सत्य की चलती-फिरती मूरत थीं। जिनकी दृष्टि में स्पष्टता, वाणी में निडरता, सच्चाई और जीवन में ईश्वरीय अनुशासन सदा झलकता था। बाबा पर अटूट निश्चय और विश्वास उनकी आध्यात्मिक परिपक्वता का आधार था। ऐसी महान आत्मा का जीवन स्वयं में एक प्रेरणादायक संदेश है।

ब्रह्माकुमारीज़ ईश्वरीय विश्व विद्यालय की पूर्व मुख्य प्रशासिका, आदरणीय दादी जानकी जी का जीवन आध्यात्मिक परिपक्वता, सादगी और सत्यनिष्ठा का जीवन्त उदाहरण था। उनकी पुण्यतिथि के पावन अवसर पर उनका स्मरण केवल श्रद्धा का विषय नहीं, बल्कि उनके गुणों को अपने जीवन में धारण करने का प्रेरक संदेश है। दादी जी को "ज्ञान की मस्तानी" कहा जाता था, क्योंकि उनके भीतर ज्ञान का ऐसा नशा था जो आत्माओं को सहज ही परमात्मा से जोड़ देता था। वैसे तो दादी के जीवन को देखें तो सर्वगुण सम्पन्न थीं। फिर भी उनके जीवन को मुख्य छः बिन्दु में सार रूप में समझने की कोशिश करते हैं।

1. ज्ञान की मस्तानी - दादी जानकी जी के जीवन का आधार ईश्वरीय ज्ञान था। ज्ञान उनके लिए केवल सुनने या सुनाने की वस्तु नहीं, बल्कि जीने की विधि था। उनके बोलने, चलने और निर्णय लेने में ज्ञान की स्पष्ट झलक दिखाई देती थी। वे स्वयं ज्ञान में स्थित रहती थीं और दूसरों को भी उसी स्थिति में लाने की कला जानती थीं। इसलिए उन्हें "ज्ञान की मस्तानी" कहा गया-ज्ञान में डूबी हुई, ज्ञान से सराबोर।

2. सादगी की साकार मूर्ति- दादी जी का बाह्य जीवन अत्यंत साधारण था, परन्तु आन्तरिक स्थिति अत्यंत ऊँची। उनका रहन-सहन, वाणी और व्यवहार सादगी से भरा हुआ था। किसी भी प्रकार का दिखावा उनके जीवन में नहीं था। उनकी सादगी ही उनकी सबसे बड़ी शोभा थी, जो आत्माओं को स्वतः आकर्षित करती थी।

3. सच्चाई की मूरत- दादी जानकी जी सत्य के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित थीं। वे जो सोचती थीं, वही बोलती थीं और जो बोलती थीं, वही करती थीं। उनके जीवन में दोहरापन नहीं था। यही कारण था कि उनकी कही हुई हर बात में वजन होता था और आत्माएं सहज ही उन पर विश्वास करती थीं।

4. सत्य की सच्चाई- दादी जी केवल सत्य बोलने वाली नहीं थीं, बल्कि सत्य को जीने वाली थीं। ईश्वरीय मर्यादाओं, सिद्धांतों और अनुशासन के प्रति उनकी निष्ठा अटल थी। परिस्थितियाँ कैसी भी हों, उन्होंने कभी सत्य का साथ नहीं छोड़ा। यह गुण उन्हें एक सशक्त नेतृत्व प्रदान करता था।

5. सफाई-तन, मन और वाणी की- दादी जानकी जी के जीवन का एक विशेष गुण था-सफाई। यह सफाई केवल बाहरी नहीं, बल्कि मन, बुद्धि और वाणी की भी थी। उनके संकल्प स्पष्ट, शुद्ध और सकारात्मक होते थे। उनकी वाणी में कोई मिलावट नहीं थी, इसलिए उनके शब्द आत्माओं के हृदय को स्पर्श करते थे।

6. बाबा पर अटूट निश्चय और विश्वास
दादी जी की आध्यात्मिक परिपक्वता का सबसे बड़ा प्रमाण था- परमात्मा(बाबा) पर उनका अडिग निश्चय और अटल विश्वास। वे सदा यही कहती थीं कि "बाबा है तो सब है"। यही विश्वास उन्हें हर परिस्थिति में निर्भय, निश्चिंत और स्थिर बनाए रखता था। उनका यह भरोसा ही उनके जीवन की परिपक्वता और महानता का आधार था।

दादी जानकी जी ऐसी साकार मूर्ति थीं, जिनका जीवन स्वयं एक संदेश था। उनकी पुण्यतिथि पर हम यही संकल्प लें कि सादगी, सच्चाई, सफाई और बाबा पर अटूट विश्वास को अपने जीवन का आधार बनाकर, हम भी उनके समान ज्ञान की मस्ती में स्थित हो सकें। यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है।

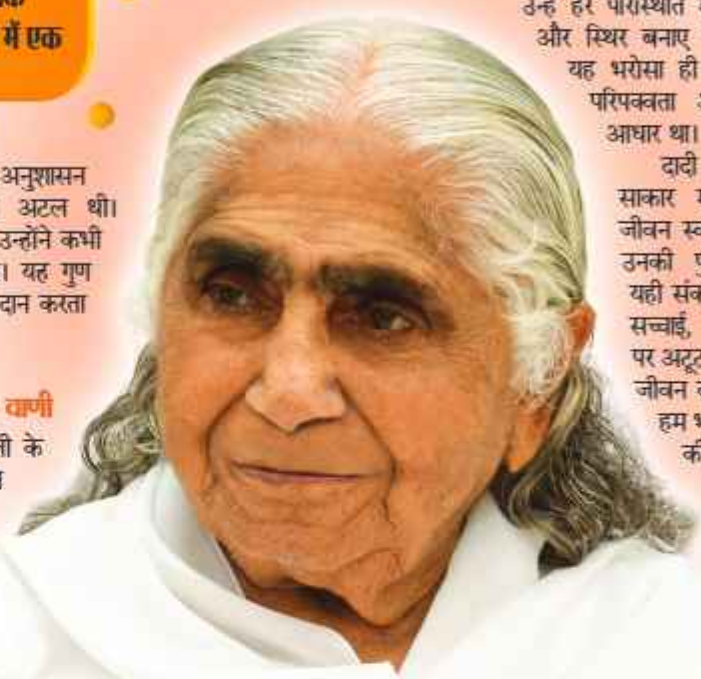

राजयोगिनी दादी जानकी जी की पुण्य तिथि पर विशेष...

रशिया-मॉस्को। रूस में भारत के माननीय राजदूत, महामहिम विनय कुमार और श्रीमती आयोना सिन्हा के सेवाकेन्द्र आगमन पर आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में साथ हैं राजयोगिनी ब्र.कु. सुधा दीदी तथा अन्य ब्रह्माकुमार भाई-बहनें।

सैन फ्रांसिस्को-यूएसए। गणतंत्र दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में कौंसल जनरल डॉ. के श्रीकर रेड्डी व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती प्रतिमा रेड्डी, ब्र.कु. सुकन्या, ब्र.कु. क्योको तथा अन्य।

फतेहगढ़-उ.प्र.। ब्रिगेडियर माइकल डीसूज़ा, राजपूत रेजिमेंटल सेंटर के कमांडेंट को परमात्मा का परिचय देने के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुमन दीदी।

फर्रूखाबाद-बीबीगंज(उ.प्र.)। माघ मेला श्री रामनगरिया गंगातट पांचालघाट में लगाई आध्यात्मिक प्रदर्शनी पण्डाल का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए श्री श्री 108 ईश्वरदास जी महाराज,पीठाधीश्वर,श्री दुर्वासा ऋषि आश्रम, श्री श्री 1008 स्वामी जयदेवानन्द सरस्वती योगी जी महाराज,महामण्डलेश्वर,बद्रीनाथ धाम,कनखल,हरिद्वार, श्री श्री 1008 स्वामी सुरेशानन्द सरस्वती जी महाराज,नैमीषारण्य धाम,सीतापुर, श्री त्यागी जी महाराज नीमकरोरी धाम, श्री मयंक महाराज जी,मानस मधुकर,कानपुर, ब्र.कु. मंजू बहन, ब्र.कु. मिथलेश तथा अन्य।

इगलास-उ.प्र.। विराट हिन्दू सम्मेलन में श्री श्री 1008 संत पूर्ण गिरी महाराज को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. हेमलता बहन एवं ब्र.कु. शान्ता बहन।

ओआरसी-गुरुग्राम(हरियाणा)। नव वर्ष के उपलक्ष्य में टीवी9 भारतवर्ष डिजिटल के हेड पंकज कुमार को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्रह्माकुमारीज़ की मल्टीमीडिया कोऑर्डिनेटर ब्र.कु. ज्योति।